P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-11* February 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

इत्र श्रमिकों की विभिन्न परिस्थितियों की समीक्षा और अवलोकन

धर्मेन्द्र वर्मा
शोधार्थी,
समाज शास्त्र विभाग,
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय,
जबलपुर, म.प्र.

गजानन मिश्रा
प्राध्यापक,
समाज शास्त्र विभाग,
महात्मा गाँधी स्नातकोत्तर महा विद्यालय,
करेली, नरसिंहपुर, म.प्र.

सारांश

यह प्राथमिक सर्वेक्षण के आधार पर लिखित शोध पत्र है । जिसमें इत्र श्रमिकों की समस्याओं पर अधयन किया गया है । इस शोध का प्रमुख उदेश्य था कि इत्र श्रमिकों की विभिन्न स्थितियों के मूल कारणों का अध्ययन करना जैसे की इत्र श्रमिकों की सामाजिक स्थिति, आर्थिक स्थिति एवं सांस्कृतिक स्थिति के करण । इस शोध पत्र में इत्र श्रमिकों की स्थिति के मुख्य कारणों का विश्लेषण किया गया है जिसमें से प्रमुख है इत्र की कम होती मांग, कम होती मांग से इत्र का उद्योग अत्यधिक प्रभावित हुआ है जिसका सीधा असर इस उद्योग में काम करने वाले इत्र श्रमिकों पर हो रहा है और इत्र के उद्योग से प्रभावित होकर इस व्यवसाय से जुड़े लम्बे समय के श्रमिकों की स्थिति को सीधा प्रभावित करना है।

मुख्य शब्दः इत्र व्यवसाय एवं श्रमिकों की स्थिति।

प्रस्तावना

इत्र की उत्पत्ति के बारे में कई कहानियाँ हैं, जिनमें मुगल सम्राट जहांगीर भी शामिल है, जिसे उद्योग के पहले संरक्षक के रूप में श्रेय दिया जाता है क्योंकि उनकी पत्नी, महारानी नूर जहां, गुलाब पंखुड़ियों के साथ पानी से स्नान करने के लिए प्रयोग करती थीं।[5] जल्द ही लोगों ने प्राकृतिक सुगंध के साथ प्रयोग करना शुरू किया, जहांगीर के प्रोत्साहन के साथ, इत्र बनाने की संस्कृति की ओर अग्रसर किया गया जिससे इत्र उद्योग ने अपनी जगह बनाई और इससे हजारों श्रमिकों तो रोजगार मिला । परन्तु हाल के समय में इत्र की मांग प्रभावित हुई है जिला प्रशासन के आंकड़ों के मुताबिक पान मसाला और चबाने वाले तम्बाकू पर हालिया प्रतिबंधों ने भी मांग को प्रभावित किया है, [4,6] क्योंकि ये क्षेत्र देश में निर्मित इत्र का करीब 80 फीसदी खरीदते हैं। कल्याण क्षेत्र में भी एक छोटा सा प्रतिशत उपयोग किया जाता है। गुलाब और केवरा केइत्र, स्वाद के लिए पारंपरिक मिठाई में भी उपयोग किए जाते हैं। शेष का उपयोग खाद्य पदार्थों जैसे आइस–क्रीम और पेय पदार्थों में किया जाता है। मांगमें कमी ही एकमात्र समस्या नहीं है। पूजा परफ्यूमेरीज के गौरव मल्होत्रा कहते हैं, ''प्रसिद्ध रूह गुलाब (गुलाब इत्र) की 100 मिलीलीटर शीशी, 1,000 रुपये के खुरदरा मूल्य पर मिलती है, वह बोतल के ढक्कन को खोलते है और गुलाब सुगंध उसे उनकी दुकान महक उठती है।[7] लेकिन आप बाजार में 100 रुपए में भी रूह गुलाब(गुलाब इत्र)ले सकते हैं, लेकिन मानकों की अनुपस्थिति में, उत्पाद की गुणवत्ता पीड़ित है। यह सभी समस्याये इत्र श्रमिको की स्थिति की प्रमुख कारण है । कन्नौज राजा हर्षवर्धन के साम्रराज्य की राजधानी थी इस क्षेत्र में इत्र का कारोबार काफी बढा था। कन्नौज को इत्र बनाने का तरीका फारसी कारीगरों से मिला था। आज भी अलीगढ़ से लाये गये दमश्क गुलाब नामक प्रजाति का कन्नौज का इत्र काफी मशहूर है। कन्नौज के इत्र काफी पुराने समय से मशहूर है। यहाँ के इत्र को प्राकृतिक गुणों से युक्त एवं एल्कोहल से मुक्त रखा जाता है। कन्नौज भारत के सबसे प्राचीनतम शहरों में एक है।

सुगन्ध व्यवसाय

पाणिन की आष्टध्यायी में पाण्य योग्य अर्थात् बाजारों में बिकने वाली वस्तुओं की सूची दी गयी है। उनमें बहुत से सुगन्ध द्रव्यों के नाम भी है जैसे कृत्ता, उर, कि चाणक्य के अर्थ से ज्ञात होता है कि दक्षिण के पूर्वी अर्थ में स्त्रियों का आवास और सुगन्ध कक्ष होता था। नर में भी पूर्वी दिशा में सुगन्ध की दुकानों की व्यवस्था रहती थी।[1, 3] बौध्द ग्रन्थ मिलन्दपन्हों से पता चलता है कि यूनानी मूल का शासक मिनाण्डर की राजधानी साकल के बाजारों में बनारसी कपड़ों, अभूषण और इत्र सुगन्ध की विशेषता स्वत्रंत दुकानें थी। सिकन्दर महारन के आक्रमण 326 ई.पू. के बाद भारतीय व्यापारियों को एक नया व्यापार क्षेत्र मिल

गया। मौर्य युग (325 से 184 ई.पू.) में आपेक्षित सुधार और विकास हुआ। फलस्वरुप 500 से 1000 गाड़ियों के साथ बंगाल के पाटलिपुत्र, कान्यकुब्ज, मथुरा, हस्तिनापुर, तक्षषिला से होते हुए पुष्कलावती पहुँचकर पश्चिमोत्तर सीमा पार कर बाल्हीक प्रदेश पहुँच जाते थे।[2] इत्र के सम्बन्ध में सबसे पुरानी दुकान दिल्ली में स्थित है। यहाँ पर एक समय में जब अनसुया बसु जी पहुँची थी तभी न केवल इत्र की रानी के दीदार हुए बल्कि इत्र से सम्बन्धित हर क्षेत्र का काफी अनुभव भी लिया था। इत्र की माँग उस समय काफी तीव्र गति से बढ़ती जा रही थी। इत्र श्रमिकों को रोजगार के अवसर भी इसी से बढ़ते जा रहे थे। प्राचीनकाल में इत्र का उपयोग धार्मिक क्षेत्र में एवं मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में भी किया जाता था। इत्र सुगन्ध के सम्बन्ध में कई तरह की मान्यताएँ भी है। जिसके अन्तर्गत जंगल में कई तरह के सुंगन्धित जड़ी–बूटियों की खोज की गयी थी। जिसमें उनके जलने के बाद भी वहाँ के वातावरण में उसकी सुगन्ध रहती है। लेकिन अब इसका उपयोग इत्र तेल को बनाने के सम्बन्ध में किया जाता है। आजकल लगभग सभी धर्म में सुगन्ध रुपी इत्र का उपयोग किया जाता है। चाहे वह पूजा सम्बन्धी हो या फिर समारोह के अवसर पर हो और कई बार हम न चाहे के भी उसकी सुगन्ध को महसूस कर उसकी तरफ जाना पड़ता है।[7] वीं सदी में इत्र के रुप में कन्नौज का इत्र काफी विख्यात था। जो कि दुनिया के कई देशों में भेजे जाते थे।

अध्ययन का उद्देश्य

यह शोध पत्र निम्न लिखित उद्देश्य पर आधारित है ।

1. इत्र श्रमिको के जीवन का अधयन करना।
2. इत्र श्रमिको की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को ज्ञात करना।

साहित्यावलोकन

Idialu (2012) ने अफ्रीका के भिन्न दृ भिन्न समुदायों के श्रमिको से प्राथमिक आंकड़े प्राप्त किये तथा विश्लेषण करने पर पाया की श्रमिक अमानवीय व्यवहार के शिकार होते है ।

Katia Sarla et al. (2012)ने भारत राज्य केरला में प्राथमिक सर्वे के आधार पर श्रमिको से आंकड़े एकत्र करके विशलेषण किया और पाया की श्रमिको को दो प्रकार के झटके लगते है एक आर्थिक और दूसरा शारीरिक झटका लगता है ।

Dreze and Shrinivasan (1996) ने उपभोक्ता व्यय के आधार पर राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण से ग्रामीण भारत में गरीबी और श्रमिको में सम्बन्ध निकला। उन्होंने प्रति व्यक्ति पूंजी व्यय के आधार पर गरीबी का अनुमान लगाया और पाया की श्रमिक परिवार के मुखिया अन्य परिवार के मुखिया से अधिक गरीब है ।

Chandra (2011) ने विभिन प्रकार की सरकारी रिपोर्ट एवं श्रमिको से संबंधित प्रकाशित साहित्य का अध्यन कर के यह निष्कर्ष निकला की समाज में श्रमिको की सुरक्षा के लिए सरकारी निति की आवश्यकता है ।

डॉ0 किशन यादव, (2016) पंचायती राज, महिला सशक्तीकरण, एवं सरकारी रिपोर्ट के आधार पर महिलाओं की स्थिति को श्रमिक सुरक्षा के अन्तर्गत लानाएवं महिला सम्बन्धी नीति में ग्रामीण महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देना।

विश्लेषण

एफ.एफ.डी.सी. कन्नौज के अनुसार, शहर में करीब 4,000 लोग इत्र उद्योग में किसी एक रूप में या दूसरे में लगे हुए हैं। वे किसान जो इत्र के लिए फूल की खेती करते है, या वह श्रमिक जो लगभग 400 निर्माण इकाइयों में कम करते है, थोक विक्रेता, खुदरा विक्रेता, मजदूरों और पैकेजिंग श्रमिक ।

तेलंगाना, तमिलनाडु, गुजरात, ओडिशा और यूपी भारत के इत्र निर्माण केंद्रों में से हैं। चूंकि यह एक बड़े पैमाने पर असंगठित क्षेत्र है, इसलिए उद्योग के आंकड़े आना मुश्किल है। अंदरूनी सूत्रों का अनुमान है कि कन्नौज के इत्र उद्योग का मूल्य 100 करोड़ रुपये है। एक औसत इकाई हर महीने 2,000 लीटर इत्र और आवश्यक तेल बनाती है, जो खाड़ी देशों में 20 प्रतिशत निर्यात करती है, जहां गैर मादक इत्र के लिए एक महत्वपूर्ण बाजार है।आजइस उद्योग से जुड़े सभी प्रकार के श्रमिक चिंतित हैं क्यूकि कन्नौज के इत्र और परफ्यूमर एसोसिएशन के अध्यक्ष ओम प्रकाश पाठक कहते हैं, ''उद्योग में मंदी देखी जा रही है, जिसमें 45 निर्माता शामिल हैं। और इसके कारण कई हैं।[8]जिसके अन्तर्गत सभी लोग जो इससे सम्बन्धित है वो इससे प्रभावित हुए है।

लाभ के लिए स्थानांतरण

कन्नौज में बेचे जाने वाले इत्र का लगभग 90प्रतिशत खाद्य उद्योग और गुटका, चबाने योग्य तंबाकू और पान मसाला के निर्माताओं के पास जाता है,जिस पर प्रतिबन्ध से इसकी मांग में भरी कमी हुए है ।इत्र उद्योग के लिए एक अतिरिक्त चिंता कच्चे माल की बढ़ती लागत है, चन्दन के तेल का व्यवसाय काफी लम्बे समय से व काफी बढ़ा है। 1970 में एक लीटर चंदन के तेल के लिए 650 रु. से, कीमत आज 90,000 रु. तक पहुंच गई है। यह बताता है कि क्यों शुद्ध गुलाब राउ (गुलाब का तेल) की कीमत रू. 12 लाख प्रति लीटर तक हो गयी है।

महत्वपूर्ण अवलोकन

इत्र श्रमिकों की समस्या के मुख्य कारण है इत्र की मांग का कम होना और मांग कम होने का मुख्य कारण है कई राज्यों में तम्बाकू पर प्रतिबंध। जिसका सीधा असर इत्र व्यवसाय पर पड़ा है क्यूकि 90 प्रतिशत मांग का शोत्र यही है।

निष्कर्ष

समाज में श्रमिकों की साक्षरता को बढ़ने की आवश्यकता है जिससे श्रमिक इस तरह की परिस्थितियों से निपटने के लिए अपने आप को पहेले से बेहतर स्थिति में पाएँगे। सरकार को श्रमिको के लिए उधमशील कार्यक्रम को बढ़ावा देने की आवश्यकता है जिससे उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *Idialu EE. The Inhuman Treatment of Widows in African Communities. Current Reesearch Jounral*

of Social Sciences. Ekpoma, Edo state, Nigiria. 2012; 4(1):6-11. ISSN: 2041-3246.

2. *Mohindra KS, Haddad S, Narayana D. Debt, Shame and Survival: Becoming and Living as Widows in Rural Kerala India. Mohindra et al. BMC Internatioanl Health and Human Rights 2012. 1-13. http://www.biomed central.com/ 1472.698x/12/28*
3. *Dreze J, Srinivasan PV. Windowhood and Poverty in Rural India: Some Inferences from Household Survey Data. Jounral of Development Economics, Bombay, India. 1997; 54:217-234.*
4. *Chandra A. Vulnerability of Widoes in India: Need for Inclusion. International Jounral of Social and Economic Research. 2011; 1(1):124-132.www.IndianJounrals.com, c@rediffmail.com//chandra.anjuli@gmail.com*
5. *Jersild, A.T. Etal : "A Comparative study of the worries of children in twoschool situations." Journal of Experiments in Education. No. 9, 1941 PP 23, 26.*
6. *Buch, M.B. (1972-78): "A survey of research in education" M.S.University, baoda.*
7. *Buch. M.B. (1983-88) : "Fourth survey of research in education", Vol. II.*
8. *डॉ0 किशन यादव, ''पंचायती राज में महिलाओं की स्थिति : एक राजनैतिक अयध्यन'', शब्द–ब्रह्म, पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल, Vol.4, Issue 11,flrEcj] 2016] ist 5&9 ((Available at www.shabdbrahm.com)*